ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - II APRIL - JUNE - 2020

MARATHI PART - II / HINDI

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	साम्यवाद का प्रधानस्त्रोत :- ''श्रीमद्भगवद्गीता'' **डॉ. अजित अशोक देव**	१-५
२	अभिराज राजेन्द्र मिश्र के कथा साहित्य में पौराणिक शास्त्रीय ज्ञान **डॉ. अशोक कँवर शेखावत**	६-१०
३	चिकित्सा और स्वास्थय का पारम्परिक ज्ञान **कविता शर्मा**	११-१७
४	मानवकल्याणाय संस्कृतज्ञानस्त्रोत **डॉ. प्रशान्त कुमार सेठी**	१८-२२
५	कौटिल्यीयार्थशास्त्रे वर्णितं समाजचित्रम् **टुम्पा जान**	२३-२९
६	कात्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित सामाजिक-समरसता **डॉ. अरुणिमा**	३०-३५
७	साहित्यशास्त्रीय परम्परा में भानुदत्त का योगदान **डॉ. बन्सी केशवराव लव्हाळे**	३६-४२
८	रामकालीन अर्थव्यवस्था - अर्थव्यवस्था की परंपरा के संदर्भ में **डॉ. गीता भुत**	४३-४६
९	सर्वदर्शन के प्रति आचार्य हरिभद्र का योगदान **शैलेश दत्तात्राय पवार**	४७-५३
१०	अनुवाद के संदर्भ में संस्कृत शास्त्रों की भाष्य एवं टीका परम्परा का अवलोकन **शुभम उनियाल**	५४-५८
११	भारतीय संगीत के मौलीक ग्रंथों मे संस्कृत भाषा का महत्त्व **डॉ. वैशाली संतोष देशमुख**	५९-६२
१२	हिमालयस्य पारिस्थितिकतन्त्रे दिव्यौषधय: **सौरभ कण्डवाल:**	६३-६७
१३	उपनिषद्की ज्ञानपरंपरा, निहीत विद्याएँ तथा औपनिषदिक ज्ञानसे प्राप्त अंतर्दृष्टी **कु. पियुषा पुरुषोत्तम नाईक**	६८-७५
१४	देहाती महिलाओके स्वास्थ्यसंबंधी उपचार प्रणाली के परिवर्तन का अध्ययन : क्षेत्र मराठवाडा **Dr. Shwetambari P. Kanakdande**	७६-८१

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

११. भारतीय संगीत के मौलीक ग्रंथों मे संस्कृत भाषा का महत्त्व

डॉ. वैशाली संतोष देशमुख
विभाग प्रमुख, संगीत विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद.

भारतीय संगीत की परंपरा भारतीय संस्कृती के समान ही प्राचीन परंपरा मानी जाती है । भारतीय संस्कृती में संगीत कला को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । प्राचीन काल सें ही भारतीय संगीत कला का सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । भारतीय संगीत कला का मुख्य उद्देश केवल मनोरंजन करना नही है अपतू वह आध्यात्मिकता सें पूर्ण होने के कारण यह कला अमुर्त है और संगीत कला का अंतिम ध्येय आत्मकल्याण मोक्ष एवं भगवदोपासना करना ही है ।

योगशिखोपनिषद में संगीत अनुसंधान को सबसे बडी पूजा माना गया है । "पूजात कोटि गुणम् स्तोत्र, स्नोत्रात् कोटी गुणम जप;, जपात-कोटि गुणम् गानम्, गानतपरम, नाही" । अर्थात पूजा से स्तोत्र करोड गुणा श्रेष्ठ है, स्तोत्र से करोड गुणा श्रेष्ठ जप है, जप से करोड गुणा श्रेष्ठ गान है ।

ग्रीक विद्वान 'पायथॉगोरस' के अनुसार विश्व के अणु-रेणु में संगीत परिव्याप्त है ।

'प्लेटो' के अनुसार समस्त विज्ञानों का मूलाधार संगीत है । और किसी भी देश की संस्कृति और सभ्य का अनुमान उसकी संगीत कला की अवस्था से लगाया जा सकता है ।

लैडन के अनुसार संगीत तो विश्व भाषा है । गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार "शब्दों का अन्त संगीत का प्रारंभ है ।

Great musician Beathoven said "music is the mediator between the soiritual and the sensual life.

इसी विषय को आगे लिखत हुए हमे भारतीय इतिहास में ही भारतीय संगीत कला का आदि रुप वेंदों में मिलता है । वैदिक काल ईसा से लगभग 2000 वर्ष पूर्व था इसपर सभी विद्वावानोंकी सहमती है । इसिलीये भारतीय संगीत कला का इतिहास कम से कम 4000 वर्ष प्राचीन है । पुरे विश्व में सबसे प्राचीन संगीत सामवेद में मिलता है ।

भारतीय संगीत की मुल व्याख्या संस्कृत भाषा में सर्वप्रथम लीखी है ।

गीतं, वाद्यं नृत्यं त्रयं संगीतम् उच्चयते ।

अर्थात् गायन, वादन और नृत्य इन तिनो कलाओं का समूह संगीत कहलाता है । इससे यह ज्ञात होता है की संस्कृत भाषा ही एकमेवाद्वितीय भाषा प्राचीन काल में प्रचलीत थी । भारतीय संगीत का विकास प्राचीन काल, मध्ययुगीन काल एवं आधुनिक काल में विभिन्न प्रकारचे परीवर्तनशीलता के अनेक रुपों में हुआ है ऐसा दिखाई देता है । भारतीय संगीत का महत्त्वपूर्ण काल हमें प्राचीन काल ही मानना होगा । इसका यह कारण है की प्राचीन काल में संगीत का जो रुप अस्तित्व में

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

था उसका संपूग्र विवरण सैद्धांतिक स्वरुप में संस्कृत भाषा में लीखा गया है । इसलीये भारतीय संगीत के प्रसार एवं प्रचार का महत्त्वपूर्ण कार्य संस्कृत भाषाने किया है और इस कारण से भारतीय संगीत में संस्कृत भाषा का महत्त्व अनन्य साधारण दिखाई देता है ।

संस्कृत भाषा के कारण सें ही भारतीय संगीत का आधुनिक विकसित आकृति आज सैद्धांतिक एवं प्रात्यक्षिक रुप में जीवित है । वैदिक काल भारतीय संगीत का महत्त्वपूर्ण काल माना जाता है । इस काल में अनेक ग्रंथो का निर्माण हुआ है । औनर इन ग्रंथों की निर्मिती सें यह ज्ञात होता है सभी ग्रंथो का लेखन संस्कृत भाषा में ही हुआ है ।

संस्कृत भाषा में लिखे दुए भारतीय संगीत के संभी ग्रंथों से यह ज्ञात होता है की प्राचीन काल में संगीत किस रुप में उपस्थित था । इस काल के संगीत से ही भारतीय संगीत के स्वरों की निर्मिती हुई है । और यह संगीत जाज विकसित होकर संपूर्ण जगत में एक अनोखा संगीत पहचाना जात है ।

प्राचीन काल में वेदो की निर्मिती हुई है इसलीय इस काल को वैदिक काल भी माना जाता है । इन वेदों को संहिता भी कहा जाता है । संहिता का साधारण अर्थ गायन योग्य वेद मंत्रों का संग्रह । इन चार वेंदों में सामवेद में भावनायें और गायन दोनों का संगम अथवा समन्वय था । सामवेंद में भारतीय संगीत के स्वरों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया है । संपूर्ण वैदिक साहित्य में सामवेद को संगीत माना जाता है भारत की संपूर्ण संगीत शास्त्र सामवेद कोही संगीत का आधार मानता है ।

पं भरत के नाय्यशास्त्र के अनूसार जग्राह सामभ्यो गीतमेवच । पं. शारंगदेव ने भी संगीत रत्नाकर ग्रंथ में इस बात को लिखा है की सामवेदादिदं गीतं सजग्राहं पितम् हः । सामवेद में भारतीय संगीत के अन्य गान विधाओं का उल्लेख भी वैदिक साहित्य में भी प्रचूर मात्रा में मिलता है । वेदों की निर्मिती संस्कृत भाषा में ही हुई है । वैदिक युग से इ. स. 1500 तक और मुघल काल में भी अनेक ग्रंथो की निर्मिती हुई और यह सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही लिखे गये है ।

पं. भरत मुनी का 'नाट्यशास्त्र' यह ग्रंथ भारतीय संगीत का आधारग्रंथ माना जाता है । यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में भरतभूमीने लिखा है । पं. भरतमुनी संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडीत थे । यह ग्रंथ पाचवे शतक के पूर्व लिखा गया है । पं. भरतभूमी ने भरतनाट्यशास्त्र में गीत, वाद्य, नाट्य, अभिनय, कुतप, वृन्दगान, नाट्यगृह की रचना इ. विषय में विस्तृत एवं तर्कशुद्ध विवेचन किया है । संस्कृत भाषा में लिखा हुआ यह ग्रंथ सभी कलांओं का आधारग्रंथ माना जाता है । पं. दत्तिल ने हतिलम नायक ग्रंथ संस्कृत भाषा में पाचवी शताब्दी में ही लिखा हुआ है । सातवी शताब्दी में पं. नारद ने नारदिय शिक्षा यह, ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा है और यह एक बहुमोल ग्रंथ है । इस ग्रंथ में संगीत की अनेक विधाओं के साथ गायक-वादकों के गुण अवगूणों का वर्णन मिलता है ।

आठवी शताब्दी में पं. मतँग मुनीने बृहत्देदेशी नामक ग्रंथ की निर्मिती की । इस ग्रंथ में सर्वप्रथम 'राग' शब्द की व्याख्या और ग्राम, मुर्छना, जातिलक्षणे, तालवाद्य इ. का सविस्तर वर्णन मिलता है । पं. मतंग मुनीने किन्नरवीणा की रचना की है । इसका वर्णन इस ग्रंथ में किया है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

दसवी शती में आचार्य अभिनवगुप्त नें 'अभिनव भारती ' नामक ग्रंथ की रचना की है । आचार्य अभिनवगुप्त की गणना विश्व के महान मनीषियें में है । आचार्य अभिनवगुप्त ने आध्यत्मशास्त्र, साहित्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, संगीतशास्त्र तथा सभी दर्शनो का अध्ययन किया । वे अपने युग के अनुपम वीणा वादक थे । 'अभिनव भारती' ग्रंथय की तुलना केवल पंतजली मुनि नें के 'महाभाष्य' के साथ की जा सकती है । इसी शताब्दी में अंजनेय संहिता ग्रंथ पं. अंजनेयने लीखा है । इसी शताब्दी में पं. अगस्थ ने तालसमुद्र नामक ग्रंथ की रचना की है ।

ग्यारही शताब्दी में नृत्यकला का आधारग्रंथ दर्शरुपक पं. धनंजय ने – संस्कृत भाषा में लीखा है । पं. नान्यदेव ने 'सरस्वतीहृदया' ग्रंथ की रचना की है । इसी शती मे पं. जगदेकमल्ल ने संगीत चुडामणिनामक ग्रंथ की निर्मिती की है । इसी शताब्दी में पं. शारदा तनय ने 'भावनगय'ग्रंथ, पं. हरियाल ने संगीतसुधार ग्रंथ की स्थना की है । ये उपर्लिखित सभी ग्रंथ संगीत विषय में विस्तारता का रूप देने में संस्कृत भाषा में लिखे हुए अनन्यसाधारण ग्रंथ है ।

बारहवी शताब्दी में पं. सोमेश्वर ने मनसोल्लास ग्रंथ की रचना की है । इसी शती में एक और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पं. जयदेव ने 'गीतगोविंद' नामक लीखा है । इस ग्रंथ में रागरागिणी और ताल विषयक महत्त्वपूर्ण जानकारि मिलती है । पं. जयदेव एक महान शास्त्रकार, वाग्गेयकार, संगीतज्ञ, लेखक थे । इस ग्रंथ का अनूवाद अनेक भाषाओ का किया है ।

तेरहवी शहताब्दी का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'संगीत रत्नाकार' पं. शारंगदेव ने लीखा हुआ है । इस ग्रंथ में सात अध्याय है । भरतकृत नाट्यशास्त्र एवं बृहत्ददेशी के आधार पर शारंग देव ने अपने ग्रंथकार सृजन किया था । वर्तमान समय में हम जिन वाद्यों का प्रयोग कर रहे है उनसे मिलते जुलते लगभग सभी वाद्यों को वर्णन संगीत रत्नाकार में किया गया है । इसी शताब्दी में पं. पार्श्वदेव ने 'संगीतसमयसार' नामक ग्रंथ की रचना की है । इस ग्रंथ मे दस अध्याय है और उपलीखित सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे हुऐ ग्रंथ है ।

चौदहवी शताब्दी में पं. शृंगारशेखर ने 'अभिनवभूषण' नामक ग्रंथ की स्थना की है । पं. विद्यारण्यने 'संगीतसार' नामक ग्रंथ लीखा है ।

पंधरवी शताब्दी मे पं. महाराणा कुंभने संगीतराज व रसिकप्रिय नामक ग्रंथ की रचना की है । सोलहवी शताब्दी में राजा मानसिंह तोमर नें मानकुतूहल नामक ग्रंथ की रचना की है ।

सोलहवी शताब्दी में राजा मानसिंह तोमर नें मान कुतूहल नामक ग्रंथ की रचना की । यह पहला ग्रंथ है जो हिंदी भाषा में लीखा हुआ है । इसी शताब्दी में पं. रामामात्य ने 'स्वरमेककलानिधी' की रचना की है । पं. गोविंद दिक्षित ने 'संगीतसूधा' नामक ग्रंथ की रचना की है । इसी शताब्दी में पं. दामोदर मिश्रने 'संगीतदर्पण' नामक ग्रंथ की रचना की है । इस ग्रंथ में गीत, ताल, नृत्य तीनों का विस्तृत वर्णन किया है ।

संतरवी शताब्दी में पं. गोविंद ने संगीतचुडामणि लीखा । इसी शताब्दि में पं. अहोबल ने संगीतापारीजात नामक ग्रंथ लीखा है । इस ग्रंथ में वीणा के तार की लंबाई द्वारा स्वरों के अंतराल समझाए गये है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

सतरवीं शताब्दी में हृदय नारायण देव, ने संस्कृत भाषा में दो ग्रंथो की रचना की है, हृदयप्रकाश अठरावी शताब्दी में पं. श्री निवास ने रागतत्वविबोध लीखा ।

पं. सोमनाथ रागविबोध नामक ग्रंथ की रचना की है । यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा गया है । रागबोध के पाँच अध्याय लिखे गये है । पं. सोमनाथ ने इसमें ६५ रागों का वर्णन २३ मेल (थाटों) के द्वारा किया है । और 'मुखारी' को शुद्ध सप्तक स्वीकृत किया है । स्वरों की संख्या कुल १४ स्वीकार की है । सात शुद्ध स्वर एवं सात स्वर कोमल माने है ।

पं. भावभट्ट नें संगीत विषय पर संस्कृत भाषा में जो ग्रंथ लिखे है उनके नाम है, अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकार, अनुपसंगीतांकुश तथा मुरलीप्रकाश ग्रंथो की भाषा से यह ज्ञात होता है की पं. भावभट्ट संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे ।

अठरावी शताब्दी तक संगीत विषयक में जो ग्रंथ लिखे गये वो सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये है । आधुनिक गये वेा सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये है । आधुनिक भारतीय संगीत इन ग्रंथो का आधार लेकर विकसित दोकल इस कला तक पहुँच गया है । इसलिये ये हम कह सकते है की संस्कृत भाषाने संगीत का परीवर्तशीलता को सुत्रबद्धता देकर विकसित रुप में आधुनिक काल तक प्रसारित कीया ।

संपूर्ण भारतीय संगीत जो ग्रंथों की सैद्धांतिकता पर आधारित है वह सभी ग्रंथो की भाषा संस्कृत है । पाचवी शताब्दी से अठरावी शताब्दी तक संस्कृत भाषा में ही संगीत का ग्रंथलेखन हुआ है । इसलीये आज यह कह सकते है की संस्कृत भाषा के कारण हीं भारतीय संगीत समृद्धी की और बढकर विकसनशीलता के रूप में वर्तमान समय में प्रचार में है ।

संस्कृत उर्फ गीर्वाणवाणी यह एक ऐतिहासिक भाषा है और धरतीपर सबसे प्राचीन समृद्ध, अभिजात और शास्त्रीय भाषा मानी जाती है । विरथात व्याकरणतज्ञ पाणिनी ने इ. स. पूर्व काल में अष्टाध्यायी इस ग्रंथ द्वारा संस्कृत भाषा को प्रमाणित किया है । संस्कृत भाषा सें ही भारत की अनेक भाषाओंकी उत्पत्ती हुई है । संस्कृत भाषा में जो वेदवाङ्मय लिखा है वह सबसे प्राचीन वाङ्मय है । संस्कृतची प्राचीन लीपी सरस्वती लीपी धी । अब संस्कृत भाषा देवनागरी में लिखी जाती है ।

यह ऐतिहासिक संस्कृत भाषा का भारतीय संगीत में एक महत्त्वपूर्ण योगदान हमे ज्ञात होता है । इसलीये संस्कृत भाषा एवं भारतीय संगीत दोनों के विषयम में संस्कृत भाषासें ही भारतीय संगीत विकसनताके अनेक रूपों को पार कर आधुनिक कल में प्रवाहित दुवा है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad